डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 19-08-2020

विषय- वैदिक साहित्य

यजुर्वेद के मंत्रों का स्वरूप

यजुर्वेद में दो प्रकार के मंत्र है-

१. ऋग्वेद से ली गई ऋचाएं और
२. गद्यमय यजुष्

गद्यमय यजुषों के आधार पर ही इसे यजुर्वेद कहा जाता है।

यजुर्वेद की प्रार्थनाएं गद्य युक्त है। और कहीं कहीं यह काव्य की ऊंचाई तक भी पहुंचा हुआ है। यजुर्वेद का महत्वपूर्ण अंग ये गद्यमय यजुष् ही है। जो कहीं-कहीं तो बहुत ही सरल है और कहीं सूत्रात्मक है ।

ऋग्वेद की ऋचाओं का परिवर्तित रूप

यजुर्वेद में ऋग्वेद से जो ऋचाएँ ली गई है वह अपने मूल रूप में नहीं ली गई है । ऋग्वेद से तुलना करने पर यहाँ उनमें पाठांतर मिलता है। इनका कारण यह है कि यजुर्वेद के मुख्य उद्देश्य (यज्ञीय कार्यों) को ध्यान में रखते हुए, उनमें प्रसंग अनुकूल परिवर्तन कर दिया गया है। इससे ऋग्वेद की ऋचाएँ यज्ञ के लिए उपयोगी बन गई है।

इसके साथ ही यह भी जानना आवश्यक है कि ऋग्वेद से कोई भी सूक्त अपने पूर्व रूप में यजुर्वेद में नहीं लिया गया है। पृथक-पृथक सूक्तों से केवल यज्ञोपयोगी ऋचाएं ही यजुर्वेद में ली गई है। ऋग्वेद से उनको लेते हुए यह ध्यान रखा गया है कि वे यजुर्वेद के किस यज्ञ के लिए उपयोगी है। अतः ऋग्वेद के प्रसंग से, उनका कोई संबंध यहाँ नहीं है । यजुर्वेद में उनका संबंध किसी विशिष्ट यज्ञ से है और वही उनका प्रसंग भी है।

यजुर्वेद के प्रार्थना मंत्र

यजुर्वेद में अनेक प्रकार के मंत्र है सुविधा के अनुसार इन्हें इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है-

1. केवल देवता के नाम वाले मंत्र - यजुर्वेद के सबसे अधिक सरल और सबसे छोटे मंत्र वे हैं जिनमें केवल देवता का नाम लेकर ही अग्नि में आहुति दी जाती है। यथा- अग्नये स्वाहा । सोमाय स्वाहा। इन्द्राय स्वाहा, आदि।

इसी प्रकार प्रातः और सायं की जाने वाली वह प्रार्थना भी बहुत ही सरल है जिसमें सूर्य और अग्नि की स्तुति की जाती है। यथा -सूर्यो ज्योतिः, ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्ज्योतिः, ज्योतिरग्निः स्वाहा।'

2. यज्ञ कार्य संबंधी मंत्र - यजुर्वेद में कुछ ऐसे मंत्र भी है जिनका उद्देश्य केवल यह बताना है कि कोई विशेष क्रिया किस लिए की जाती है। उदाहरण के लिए एक पुरोहित वृक्ष की शाखा तोड़कर उसे बछड़ों को भगाता है तब कहता है "रसाये त्वा,शक्तये त्वा"
   अर्थात् हे बछड़ो ! तुम्हें भगाने की यह क्रिया तुम्हारी रसबुद्धि के लिए है, तुम्हारी शक्ति वृद्धि के लिए है।

3. यज्ञ उपकरणों से प्रार्थना के मंत्र- यज्ञ के अवसर पर, पुरोहित जब किसी उपकरण का प्रयोग करता है ,तो नाम लेकर उस उपकरण का द्रव्य से प्रार्थना करता है। उदाहरण के लिए अग्नि में समिधा को रखता हुआ पुरोहित, उस समिधा से कहता है - तुझे अग्नि ने प्रज्वलित किया है, तुझमें अग्नि की ज्योति समा जाते और समा कर हमें भी प्रज्वलित कर दे, प्रत्युज्जीवित कर दे । इसी प्रकार जब किसी उपकरण से अनिष्ट की आशंका होती है तो उसका नाम लेकर उससे कहा जाता है कि तुम हानि मत पहुंचाना । उदाहरण के लिए यजमान की दाढ़ी बनाने वाले उस्तरे से पुरोहित कहता है - हे उस्तरे! तुम यजमान को पीड़ा मत पहुंचाना।

4. वस्तु आदि के से देवता का संबंध जोड़ने वाले मंत्र- यजुर्वेद में कुछ ऐसे मंत्र भी है जिनमें, यज्ञ की उपयोगी किसी वस्तु, पात्र या कर्म का संबंध किसी देवता से जोड़ दिया जाता है। उदाहरण के लिए यजमान की पत्नी को रस्सी से बांधता हुआ, पुरोहित उस रस्सी का सम्बन्ध अदिति से जोड़ता हुआ कहता है - तुम रस्सी नहीं हो, तुम अदिति की मेखला हो । इसी प्रकार एक स्थल पर, यज्ञ के लिए अग्नि पैदा करने वाली अरणियों को पुरुरवा और उर्वशी कहकर उन्हें प्रेमी-प्रेमिका रूप में स्मरण किया गया है ।दोनों अरणियों में से एक लघु अरणी को नीचे रखता हुआ पुरोहित कहता है- 'तुम अग्नि के उत्पत्ति स्थान हो, तुम उर्वशी हो"। इसी प्रकार ऊपर की अरणी को कहता है - "तुम आयु हो, तुम पुरुखा हो।" इस प्रकार एक स्थल पर अनेक ऐसी वस्तुओं को इकट्ठा किया जाता है, जिनका परस्पर कोई संबंध नहीं है । फिर उन्हें वेदी में इस प्रकार रखा जाता है कि वे सब मिलकर एक पक्षी का रूप धारण कर लें । तब पुरोहित अग्नि से कहता है- "सुपर्णा ऽसि गरुत्मान्--- गच्छत्व ।" अर्थात तुम सुपर्ण पक्षी हो--- तुम स्वर्ग चले जाओ।

5. इंद्रजाल मंत्र - यजुर्वेद के कुछ मंत्र ऐसे भी है जो गद्यात्मक है और जिनका संबंध अभिचार और अभिशाप से है। उन्हें ऐन्द्रजालिक मंत्र कहा जाता है । इनका उपयोग शत्रु आदि को हानि पहुंचाने के लिए किया जाता है । उदाहरण के लिए यह मंत्र द्रष्टव्य है -"धूरसि धूर्वन्तम् धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः ।"- वाजसनेयी संहिता, 1।8।

अर्थात तुम रथ का जुआ है, तुम हमारे शत्रुओं को हानि पहुंचा और जो हमें हानि पहुंचाता है उसे हानि पहुंचा, उसे हानि पहुंचा जिसे उसे हानि पहुंचा जिसे हम हानि पहुंचाते हैं।

6. देवता नामावलि वाले मंत्र - यजुर्वेद में कुछ ऐसे मंत्र है जिनमें देवता विशेष के नामों और विशेषणों को अधिक से अधिक संख्या में एक साथ रखा गया है। आगे चलकर इन्हीं मंत्रों का विकास 'शिव सहस्रनाम स्तोत्र' और 'विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र' आदि के रूप में हुआ है। यजुर्वेद में ऐसे मंत्र रुद्र की स्तुति में है । ऐसे मंत्रों का उद्देश्य विशिष्ट देवता को प्रभावित करना है ।

7. सूत्रात्मक मंत्र - यजुर्वेद में कुछ मंत्र ऐसे हैं जिनमें केवल एक वर्ण ही या एक अक्षर ही प्रयुक्त हुआ है । अति संक्षिप्त होने के कारण ही उन्हें, यहां सूत्रात्मक मंत्र कहा गया है। ऐसे मंत्रों में सबसे महत्वपूर्ण ॐ है । मूल रूप से इसका अर्थ देवों की भाषा में इस वर्ण का अर्थ 'हां' था। देवों की भाषा में इसका अर्थ तथाऽस्तु माना गया है। वैसे आर्य जन इस अति संक्षिप्त मंत्र को, सहस्रों वर्षो से अति पवित्र और रहस्यपूर्ण मानते चले आ रहे हैं।

   इस प्रकार के अन्य मंत्र है -स्वाहा। स्वधा ।वषट् वाट्।

   डॉक्टर विंटर्निट्ज ने यजुर्वेद के कुछ मंत्रों को असंगत एवं असंबद्ध बतलाया है । एक अन्य विद्वान् श्रोडर ने तो इनकी तुलना उन्मत्त व्यक्तियों के प्रलाप से किया है । किंतु इनको असंगत प्रतीत होते हुए भी ये मंत्र सर्वथा सुसंगत है । इसका कारण यह है कि ये उन पुरोहितों के मस्तिष्क की देन है जिन्हें यज्ञ की प्रत्येक क्रिया के लिए किसी न किसी मंत्र की आवश्यकता थी । पुरोहितों ने यज्ञीय कर्मकांड को इतना अधिक विस्तार दे दिया था कि उसके लिए उन्हें इस प्रकार के असंख्य मंत्रों की आवश्यकता हो गई थी। यज्ञ का प्रत्येक कार्य करने के लिए उन्हें कम से कम एक मंत्र का पाठ करना था।